Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राजनांदगांव के सुदूर अंचल में प्रचलित परंपरागत उपचार पद्धति एक ऐतिहासिक अनुशीलन

डॉ. रामरतन साहू* दिव्या तिवारी**

* सह. प्राध्यापक (इतिहास) सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** शोधार्थी (इतिहास) सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले, विशेषकर इसके सुदूर वनांचल, मोहला, मानपुर, अंबागढ़ चौकी, डोंगरगांव जैसे क्षेत्रों में शताब्दियों से एक समृद्ध, जनजातीय ज्ञान-परंपरा पर आधारित उपचार पद्धति प्रचलित रही है। बैगा, गुनिया एवं परंपरागत वैद्यों द्वारा संचालित यह चिकित्सा-प्रणाली जड़ी-बूटी-आधारित औषधि-निर्माण, झाड़-फूंक तथा तंत्र-मंत्र के समन्वय पर आधारित है, तथा यह ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा एवं व्यावहारिक अभ्यास के माध्यम से हस्तांतरित होता रहा है। यह शोध पत्र राजनांदगांव अंचल की इस परंपरागत उपचार पद्धति के ऐतिहासिक विकास, इसके प्रमुख बैगा, गुनिया, देवार, इत्यादि द्वारा उपचार-विधियों, डोंगरगांव के महादेव डोंगरी जैसे प्रतिनिधि औषधीय केंद्रों, तथा वर्तमान में इस ज्ञान-परंपरा के संरक्षण हेतु किए जा रहे शासकीय प्रयासों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

प्रस्तावना – भारत के अनेक जनजातीय-बहुल अंचलों की भाँति, छत्तीसगढ़ का राजनांदगांव जिला विशेषकर इसका सुदूर वनांचल, जिसमें वर्तमान मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिला भी ऐतिहासिक रूप से सम्मिलित है, एक अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध परंपरागत चिकित्सा-ज्ञान की धरोहर संजोए हुए है। आधुनिक चिकित्सा-सुविधाओं की पहुँच से दूर, घने जंगलों एवं पहाड़ी क्षेत्रों में बसे गोंड, बैगा, हल्बा जैसे जनजातीय समुदायों ने सदियों से स्वास्थ्य-संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु प्रकृति पर आधारित, आत्मनिर्भर उपचार-प्रणालियाँ विकसित एवं संरक्षित की हैं।

शोध का उद्देश्य एवं पद्धति– इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

राजनांदगांव के सुदूर वनांचल की भौगोलिक-सामाजिक पृष्ठभूमि तथा इसके ऐतिहासिक संदर्भ को स्पष्ट करना।

परंपरागत उपचार पद्धति की संरचना - बैगा, गुनिया, देवार एवं वैद्यों की भूमिका का विश्लेषण करना।

उपचार की प्रमुख विधियों (जड़ी-बूटी चिकित्सा, झाड़-फूंक, तंत्र-मंत्र) का दस्तावेज़ीकरण करना।

डोंगरगांव के महादेव डोंगरी जैसे स्थलों को औषधीय ज्ञान के प्रतिनिधि केंद्र के रूप में अध्ययन करना।

इस ज्ञान-परंपरा के समक्ष उपस्थित चुनौतियों तथा इसके संरक्षण हेतु वर्तमान शासकीय प्रयासों का मूल्यांकन करना।

यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें क्षेत्रीय समाचार-माध्यमों में प्रकाशित समाचार, छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति पर केंद्रित शोध-लेख, अकादमिक शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित जनजातीय चिकित्सा-पद्धति संबंधी अध्ययन, तथा छत्तीसगढ़ शासन के वन विभाग एवं आदिवासी स्वास्थ्य-संबंधी आधिकारिक विज्ञप्तियाँ सम्मिलित हैं।

राजनांदगांव के सुदूर वनांचल का भौगोलिक-ऐतिहासिक परिचय – राजनांदगांव जिला छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है, तथा इसका सुदूरवर्ती वनांचल घने साल एवं सागौन वनों, पहाड़ी श्रृंखलाओं तथा जनजातीय-बहुल बस्तियों से समृद्ध है। इस अंचल का एक महत्वपूर्ण भाग मोहला, मानपुर तथा अंबागढ़ चौकी प्रशासनिक दृष्टि से सितंबर 2022 में राजनांदगांव से पृथक होकर एक स्वतंत्र जिले के रूप में स्थापित हुआ, किंतु ऐतिहासिक-सांस्कृतिक दृष्टि से यह क्षेत्र सदैव राजनांदगांव अंचल की उसी सुदूर, वनाच्छादित एवं जनजातीय पहचान का हिस्सा रहा है।

ऐतिहासिक रूप से यह क्षेत्र चांदो (चंद्रपुर) राज के अधीन रहा, तथा ब्रिटिश शासनकाल में यहाँ कोरचा, पानाबरस तथा आमागढ़ नामक तीन छोटी रियासतें अस्तित्व में थीं। इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था आज भी मुख्यत: वन-संपदा एवं वनोपज पर आधारित है, तथा यहाँ की जनसंख्या में जनजातीय समुदायों का अनुपात उल्लेखनीय रूप से उच्च है। यही भौगोलिक दुर्गमता तथा आधुनिक चिकित्सा-सुविधाओं की सीमित पहुँच, इस अंचल में परंपरागत उपचार पद्धति के दीर्घकालिक संरक्षण एवं निरंतरता का एक प्रमुख कारण रही है।

परंपरागत उपचार पद्धति की संरचना, चिकित्सक-वर्ग – बैगा- बैगा शब्द का प्रयोग छत्तीसगढ़ के लोक-जीवन में दो अर्थों में होता है, एक विशिष्ट जनजाति के नाम के रूप में, तथा दूसरा, अधिक व्यापक अर्थ में, गाँव के परंपरागत चिकित्सक-पुरोहित के पद के रूप में, जो तंत्र-मंत्र विद्या में सिद्ध माना जाता है। सुदूर वनांचल में बैगा समुदाय के लोग आज भी बड़े पैमाने पर स्वयं ही, बिना किसी बाहरी चिकित्सकीय सहायता के, जड़ी-बूटियों की सहायता से अपनी शारीरिक व्याधियों का उपचार करते हैं। मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी क्षेत्र के आधिकारिक विवरणों में भी यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि बैगा (परंपरागत चिकित्सक) बीमारियों तथा सर्पदंश जैसी आपात स्थितियों के उपचार हेतु अपनी स्वयं की विधियों जिन्हें स्थानीय भाषा में झाड़-फूंक कहा जाता है का प्रयोग करते हैं।

गुनिया एवं देवार- जनजातीय समुदाय में रोगग्रस्त व्यक्ति को सामान्यत: गुनिया अथवा देवार के पास उपचार हेतु ले जाया जाता है। गुनिया रोग के लक्षणों का सूक्ष्म अवलोकन कर, विभिन्न प्रकार के निदान (चाहे वह शारीरिक कारण हो अथवा अलौकिक/आध्यात्मिक कारण माना गया हो) के आधार पर उपचार की विधि निर्धारित करता है। यह उल्लेखनीय है कि गुनिया एवं बैगा की भूमिका केवल शारीरिक चिकित्सक की न होकर, एक सामाजिक-आधयात्मिक मध्यस्थ की भी होती है, जो समुदाय की सामूहिक मान्यताओं एवं लोक-विश्वासों को भी प्रतिनिधित्व प्रदान करता है।

परंपरागत वैद्य- इनके अतिरिक्त, राजनांदगांव अंचल में एक अन्य वर्ग परंपरागत वैद्यों का भी है, जो मुख्यत: जड़ी-बूटी-आधारित औषधि-निर्माण एवं चिकित्सा में विशेषज्ञता रखते हैं। ये वैद्य प्राय: पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित पारिवारिक ज्ञान-परंपरा के वाहक होते हैं, तथा इनका ज्ञान मुख्यत: मौखिक शिक्षण एवं दीर्घकालिक व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से संरक्षित रहता है।

उपचार की प्रमुख विधियाँ

जड़ी-बूटी चिकित्सा - परंपरागत उपचार पद्धति का सबसे व्यापक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष जड़ी-बूटी चिकित्सा है। सुदूर वनांचल के वैद्य एवं बैगा वनों में स्वयं जाकर औषधीय पौधों, जड़ों, छालों तथा पत्तियों की पहचान करते हैं, उन्हें एकत्रित करते हैं, तथा पारंपरिक विधियों से औषधि तैयार करते हैं। उदाहरणस्वरूप, शारीरिक कमजोरी के उपचार हेतु बाल रोहीना, मोहलाइन जड़ी, कोरिया जड़ी, करिभुलेंन, केवटी छाली, रक्त गोईलर, चंपा जड़ी, शाबर भंज, नगर केना, मुर्री जड़ी तथा काकेन छाली जैसी अनेक स्थानीय जड़ी-बूटियों का प्रयोग किया जाता है कृ इन्हें सुखाकर, बारीक पीसकर, गुड़ के साथ मिलाकर कड़ाही में पकाया जाता है, तथा गोल गोटियों के रूप में बनाकर धूप में सुखाया जाता है, जिन्हें प्रतिदिन प्रात: खाली पेट सेवन करने की विधि बताई जाती है।

झाड़-फूंक एवं तंत्र-मंत्र- अनेक स्थितियों में, विशेषकर वे व्याधियाँ जिन्हें समुदाय अलौकिक अथवा अदृश्य शक्तियों से प्रभावित मानता है, उपचार की विधि जड़ी-बूटी के स्थान पर अथवा उसके साथ-साथ झाड़-फूंक एवं मंत्रोच्चार पर आधारित होती है। इस विधि में बैगा अथवा गुनिया नीम की टहनी अथवा मोर-पंख जैसी वस्तुओं का प्रयोग करते हुए विशिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हैं, जिससे नजर-टोना, अनिष्ट-दृष्टि आदि से मुक्ति की मान्यता जुड़ी है। इस प्रक्रिया में गाय के गोबर, गोमूत्र जैसी प्राकृतिक वस्तुओं का भी कहीं-कहीं प्रयोग होता देखा गया है।

महादेव डोंगरी, डोंगरगांव, औषधीय ज्ञान का एक प्रतिनिधि केंद्र- राजनांदगांव जिले के डोंगरगांव विकासखंड में स्थित महादेव डोंगरी पहाड़ी, सुदूर वनांचल की परंपरागत उपचार पद्धति के अध्ययन हेतु एक अत्यंत प्रतिनिधि एवं महत्वपूर्ण स्थल है। भगवान शिव (भोलेनाथ) को समर्पित इस पहाड़ी को स्थानीय वैद्यों एवं जड़ी-बूटी-विशेषज्ञों द्वारा आयुर्वेद का खजाना माना जाता है। प्रतिवर्ष एक विशिष्ट अवसर पर दूर-दूर से वैद्य इस पहाड़ी पर एकत्रित होते हैं, तथा यहाँ पाई जाने वाली दुर्लभ एवं असाध्य रोगों के उपचार में सहायक जड़ी-बूटियों को एकत्रित करते हैं।

वैद्यों के अनुसार, इन आयुर्वेदिक औषधियों का उपयोग विशेषज्ञों की देख-रेख में करने पर ही अपेक्षित लाभ प्राप्त होता है, तथा यदि इनसे प्रत्यक्ष लाभ न भी हो, तो सामान्यत: कोई हानि भी नहीं होती। इसके साथ ही, वैद्य समुदाय स्वयं इस बात पर भी बल देता है कि इन औषधियों के संग्रहण में प्रकृति को अनावश्यक क्षति पहुँचाना दंडनीय अपराधा की श्रेणी में आता है कृ यह तथ्य परंपरागत ज्ञान-व्यवस्था के भीतर विद्यमान एक अंतर्निहित पारिस्थितिक-नैतिक चेतना को भी प्रदर्शित करता है, जिसमें औषधीय संसाधानों के सतत, संयमित उपयोग पर बल दिया जाता है।

ज्ञान-हस्तांतरण की प्रक्रिया - परंपरागत उपचार पद्धति की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि इसका ज्ञान मुख्यत: लिखित ग्रंथों के बजाय मौखिक परंपरा, पारिवारिक उत्तराधिकार तथा दीर्घकालिक व्यावहारिक शिक्षुता के माध्यम से हस्तांतरित होता है। जनजातीय समुदाय स्वयं इस मान्यता को धारण करता है कि यह चिकित्सा-ज्ञान उन्हें 'आनुवंशिक रूप से विरासत में' प्राप्त हुआ है। अनेक परंपरागत वैद्य केवल रोगी की नाड़ी टटोलकर ही रोग की प्रकृति एवं कारण का सटीक निदान कर लेने का दावा करते हैं, जो दीर्घकालिक अनुभव-आधारित निदान-कौशल का प्रतिबिंब है।

संकट एवं चुनौतियाँ- आधुनिक एलोपैथिक चिकित्सा-सुविधाओं के क्रमिक विस्तार के साथ, राजनांदगांव सहित छत्तीसगढ़ के अनेक जनजातीय अंचलों में परंपरागत उपचार पद्धति के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। युवा पीढ़ी का आधुनिक शिक्षा एवं रोजगार हेतु पलायन, वनों के क्षरण के कारण औषधीय पौधों की उपलब्धाता में कमी, तथा परंपरागत ज्ञान के व्यवस्थित दस्तावेज़ीकरण के अभाव में, यह आशंका व्यक्त की जाती रही है कि यह बहुमूल्य ज्ञान-परंपरा आने वाली पीढ़ियों में क्रमश: लुप्त हो सकती है, यह प्रवृत्ति न केवल छत्तीसगढ़ में, अपितु ओडिशा के कोरापुट जैसे अन्य जनजातीय-बहुल भारतीय क्षेत्रों में भी समान रूप से देखी गई है।

संरक्षण हेतु समकालीन शासकीय प्रयास- इन चुनौतियों के प्रत्युत्तर में, छत्तीसगढ़ शासन ने परंपरागत उपचार पद्धति के संरक्षण हेतु उल्लेखनीय संस्थागत प्रयास आरंभ किए हैं। छत्तीसगढ़ शासन के वन विभाग के अंतर्गत संचालित छत्तीसगढ़ आदिवासी, स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा एवं औषधि पादप बोर्ड इस दिशा में सक्रिय रूप से कार्यरत है। इस बोर्ड द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 में प्रदेशभर में 11 वैद्य सम्मेलनों का आयोजन किया गया, जिनका उद्देश्य अनुभवी वैद्यों के पास संचित स्थानीय ज्ञान का व्यवस्थित दस्तावेज़ीकरण करना तथा इसे नई पीढ़ी के छात्रों एवं युवा चिकित्सकों तक पहुँचाना है। इसके साथ ही, जड़ी-बूटियों के प्रसंस्करण हेतु आधुनिक मशीनों का सामूहिक उपयोग भी प्रारंभ किया गया है।

इसके अतिरिक्त, दुर्ग वन वृत्त के परंपरागत वैद्यों द्वारा संरक्षित उपचार-पद्धतियों तथा औषधीय पौधों के ज्ञान को एक पुस्तक के रूप में संकलित किया गया है, जो इस क्षेत्रीय ज्ञान-परंपरा के स्थायी दस्तावेज़ीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। राज्य सरकार द्वारा परंपरागत चिकित्सा प्रणाली को 'सांस्कृतिक पहचान एवं जनसेवा की धारोहर' के रूप में सार्वजनिक मान्यता दिया जाना भी इस दिशा में एक सकारात्मक नीतिगत संकेत है, जिससे परंपरागत वैद्यों को सशक्तीकरण एवं सामाजिक सम्मान प्राप्त हो रहा है।

समालोचनात्मक विश्लेषण लोक-विश्वास एवं औषधीय ज्ञान का सम्मिश्रण - राजनांदगांव के सुदूर अंचल की परंपरागत उपचार पद्धति के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इसका स्वरूप दो भिन्न किंतु परस्पर गुंथे हुए तत्वों वस्तुनिष्ठ, अनुभव-सिद्ध औषधीय ज्ञान तथा अलौकिक/आध्यात्मिक विश्वास-व्यवस्था का सम्मिश्रण है। यह द्वैत-संरचना भारत के अनेक जनजातीय चिकित्सा-पद्धतियों की एक सामान्य विशेषता है, जिसमें रोग को न केवल एक शारीरिक अवस्था, अपितु प्राय: एक सामाजिक-

आध्यात्मिक असंतुलन के रूप में भी देखा जाता है।

इस दृष्टि से, वर्तमान संरक्षण-प्रयासों में एक महत्वपूर्ण विवेकपूर्ण दृष्टिकोण आवश्यक है, जहाँ एक ओर जड़ी-बूटी-आधारित औषधीय ज्ञान का वैज्ञानिक सत्यापन, दस्तावेज़ीकरण एवं आधुनिक आयुर्वेद तथा फार्माकोलॉजी के साथ समन्वय अत्यंत मूल्यवान एवं समयानुकूल है, वहीं टोनही जैसी हानिकारक सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सतत जागरूकता एवं कानूनी संरक्षण भी समान रूप से आवश्यक बना रहता है। इस प्रकार, परंपरागत उपचार पद्धति का अध्ययन एवं संरक्षण एक ऐसी संतुलित प्रक्रिया की मांग करता है, जो जनजातीय समुदाय के वास्तविक औषधीय ज्ञान का सम्मान एवं संरक्षण करे, साथ ही सामाजिक रूप से हानिकारक तत्वों के प्रति सुधारात्मक दृष्टिकोण भी बनाए रखे।

निष्कर्ष – राजनांदगांव के सुदूर वनांचल मोहला, मानपुर, अंबागढ़ चौकी, डोंगरगांव जैसे क्षेत्रों में शताब्दियों से प्रचलित परंपरागत उपचार पद्धति, जनजातीय समुदाय के आत्मनिर्भर, प्रकृति-आधारित स्वास्थ्य-ज्ञान की एक समृद्ध एवं अध्ययन-योग्य विरासत प्रस्तुत करती है। बैगा, गुनिया एवं परंपरागत वैद्यों द्वारा संचालित यह प्रणाली, जड़ी-बूटी चिकित्सा एवं झाड़-फूंक के समन्वय पर आधारित, दीर्घकालिक अनुभव-सिद्ध ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है, जिसने आधुनिक चिकित्सा-सुविधाओं से दूर, दुर्गम वन-क्षेत्रों में शताब्दियों तक समुदाय के स्वास्थ्य की रक्षा की है। महादेव डोंगरी जैसे स्थल इस ज्ञान-परंपरा के जीवंत, प्रतिनिधि केंद्रों के रूप में आज भी सक्रिय हैं।

तथापि, आधुनिकीकरण, पलायन तथा वनों के क्षरण के दबाव में यह अमूल्य ज्ञान-परंपरा क्रमिक क्षरण के गंभीर खतरे का सामना कर रही है। छत्तीसगढ़ आदिवासी स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा एवं औषधि पादप बोर्ड जैसी संस्थाओं द्वारा किए जा रहे वैद्य-सम्मेलन, ज्ञान-दस्तावेज़ीकरण तथा वैद्यों के सशक्तीकरण संबंधी प्रयास इस दिशा में एक सकारात्मक एवं आवश्यक कदम हैं। भविष्य में, इस परंपरागत ज्ञान का वैज्ञानिक सत्यापन, इसके औषधीय पक्ष का आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान के साथ समन्वय तथा साथ ही इसके भीतर विद्यमान सामाजिक रूप से हानिकारक पक्षों के प्रति सतत सुधारात्मक जागरूकता दोनों की आवश्यकता बनी रहेगी, ताकि राजनांदगांव के सुदूर अंचल की यह ऐतिहासिक चिकित्सा-विरासत सुरक्षित एवं सार्थक रूप में आगे की पीढ़ियों तक हस्तांतरित हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ईटीवी भारत, राजनांदगांव, डोंगरगांव के महादेव डोंगरी में है जड़ी-बूटियों का खजाना, जुलाई 2020।
2. चौरसिया, डॉ. विजय, बैगा जनजाति के लोग अपना इलाज स्वत: करते हैं, जनवरी 2020।
3. राज, कोरचा-पानाबरस-आमागढ़ रियासतों तथा बैगा परंपरागत चिकित्सा संबंधी विवरण।
4. शर्मा, देवयानी, पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली हमारी सांस्कृतिक पहचान और जनसेवा की धरोहर अक्टूबर 2025, दुर्ग वन वृत्त पुस्तक-संकलन, वैद्यों के सशक्तीकरण संबंधी विवरण)।
5. छत्तीसगढ़ के लोक संस्कृति में जादू-टोना, टोटका एवं बैगा, हिन्दीकुंज, (बैगा-गुनिया परंपरा, तंत्र-मंत्र संबंधी सांस्कृतिक विश्लेषण)।

****